04 / 02 / 80 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

भाग्य विधाता बाप के
भाग्यशाली बच्चे होने की अनुभूति

➢➢ संगमयुग पर मैं आत्मा अपने श्रेष्ठ भाग्य को देख रही हूँ।

➳ _ ➳ भाग्य विधाता बाप की भाग्यशाली बच्ची होने का श्रेष्ठ भाग्य प्राप्त होने की अनुभूति कर रही हूँ।

→ मैं ब्राह्मण चोटी हूँ।

■ जिनके नाम का गायन आज भी नामधारी ब्राह्मण के रूप में श्रेष्ठ गाये जा रहे है।

→ वाहः मेरा भाग्य जो...

→ शक्तियों के रूप में,

→ देवी-देवताओं के रूप में

■ भक्तो द्वारा आज भी पूजन होने का भाग्य प्राप्त है।

→ मेरे गुणों का भी भाग्य है...

■ जो कीर्तन करने वालो को शांति, खुशी और आनंद का अनुभव कराती है।

→ मेरे कर्तव्य का भी भाग्य है...

■ जो आज भी भक्त गण उत्सव के रूप में सारे वर्ष में भिन्न-भिन्न प्रकार से मनाते है।

→ मेरे रहने के स्थान का भी इतना भाग्य है...

■ जो उसका यादगार "तीर्थस्थान" हो गए है।

→ जिसकी मिट्टी का भी भाग्य है...

■ जो तीर्थस्थान की मिट्टी मस्तक से लगाते है।

→ संगम के समय का भी भाग्य है...

■ जो अमृतवेला अर्थात अमृत द्वारा अमर बनने की बेला और

■ नुमाशाम के समय का भी श्रेष्ठ भाग्य मानते है।

➳ _ ➳ मैं स्वयं को अपने इन सभी श्रेष्ठ भाग्य की स्मृति में टिका देती हूँ।

→ मैं स्वयं को वर्तमान और भविष्य दोनों में सर्व प्राप्ति के अधिकारी के रूप में अनुभव कर रही हूँ।

■ वाहः मेरा भाग्य वाहः

➢➢ मैं अपने भाग्य के स्मृति में रहकर स्वयं की चेकिंग करती हूँ ...

➳ _ ➳ कि मैंने अपने भाग्य को किस परसेंटेज तक समर्थ बनाया है।

→ कहाँ तक मैं आत्मा स्वयं को समर्थ महसूस कर रही हूँ।

■ संकल्पों का स्विच ऑन करते ही सूक्ष्म वतन में सब कुछ, सभी दृश्य इमर्ज हो रहे है।

➳ _ ➳ अपने को दिव्य गुणधारी देवता और मास्टर सर्वशक्तिवान, शक्ति रूप में अनुभव कर रही हूँ।

→ साइलेन्स की शक्ति से परमधाम की अनुभूति कर रही हूँ।

■ बाबा से मुझे सर्व प्राप्तियों का अनुभव हो रहा है।

➢➢ योग की गहराइयों की अनुभूति करते हुए अपने देवतायी स्वरूप को इमर्ज करती हूँ।

➳ _ ➳ मेरे इस स्वरूप के लिए प्रकति भी सेवाधारी बनती जा रही है।

→ सर्व रिद्धि सिद्धियाँ भी सेवाधारी बनती जा रही है।

■ मैं सिद्धि स्वरूप बनती जा रही हूँ।

➳ _ ➳ मैं अपने भाग्य के सितारे को चमकता हुआ देख रही हूँ।

→ मेरे भाग्य का वर्णन स्वयं भाग्य विधाता बाप कर रहे है।

- वाहः मेरा भाग्य वाहः।

➳ _ ➳ मैं सर्व आत्माओं के भाग्य बनाने के निमित बनती जा रही हूँ।

→ मैं विश्व कल्याणी बन महादानी, वरदानी स्थिति का अनुभव कर रही हूँ।